अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2021) दिनांक : 29-08-2021

समय सीमा : 3 घंटा तृतीय वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

पुण्य-पाप–50

प्र. 1 किन्हीं आठ प्रश्नों के उत्तर लिखें– 16

पुण्य–किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखें–

(क) आतप शुभ नाम कर्म का क्या तात्पर्य है?

(ख) स्वाध्याय का पांचवां प्रकार कौन सा है? उत्तराध्ययन सूत्र में इसका अर्थ क्या बताया है?

(ग) कौन से शरीर के अंगोपांग नहीं होते?

(घ) अनिदानता का क्या अर्थ है?

(ङ) 'कुसग्गमेत्ता इसे कामा' का अर्थ बताते हुए यह बताएं कि इसे कौन से सूत्र से लिया गया है?

(च) जीव कर्कश वेदनीय कर्म का बंध कैसे करते हैं?

पाप–किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें–

(छ) संज्वलन कषाय की स्थिति दिगम्बर परम्परा के अनुसार कितनी है, इस अवस्था में जीव कौन सी गति को प्राप्त करता है?

(ज) सर्वार्थसिद्धि की टीका में आचार्य पूज्यपाद ने पुण्य-पाप की क्या परिभाषा दी है?

(झ) पुरुष वेद किसके समान है तथा इसमें क्या खाने की इच्छा करती है और क्यों?

(ञ) आभ्युपगमिकी वेदना से आप क्या समझते हैं?

प्र. 2 निम्न प्रश्नों के उत्तर व्याख्या सहित लिखें– 10

(क) पुण्य–कल्याणकारी तथा अकल्याणकारी कर्मों के बंध के हेतुओं का उल्लेख करें। ***'अथवा'***
योग किसे कहते हैं? सिद्ध करें कि पुण्य निरवद्य योग से होता है।

(ख) पाप–घाति व अघाति कर्म पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें। ***'अथवा'***
मोहनीय कर्म के स्वभाव व उसके भेदों का उल्लेख करें।

प्र. 3 निम्न प्रश्नों के उत्तर विस्तार पूर्वक लिखें– 24

(क) पुण्य–आचार्य भिक्षु ने पुण्य की वाच्छा करने को पाप का बंध क्यों कहा है? ***'अथवा'***
क्या सावद्य दान से पुण्य प्राप्त होता है?

(ख) पाप–पुण्य व पाप के विकल्प क्या-क्या हैं? ***'अथवा'***
नौ कषाय की नौ प्रकृत्तियों को समझाएं।

अवबोध (निर्जरा से देवगति)–30

प्र. 4 किन्हीं छः प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें– 6

(क) क्या जबरदस्ती क्रिया करने से निर्जरा होती है?

(ख) चौदहवें गुणस्थान में अपूर्व निर्जरा मानी गई है, कैसे?

(ग) क्या बंध की स्वतन्त्र क्रिया है?

(घ) कार्मण शरीर व बंध एक है या दो?

(ङ) सिद्ध शिला पर जब सिद्ध नहीं रहते, फिर इसे सिद्ध शिला क्यों कहते हैं?

(च) क्या स्त्री केवली के समुद्घात होता है?

(छ) किल्विषिक देव किस जाति के देवों में आते हैं?

(ज) व्यंतर देवों का स्थान नीचे है फिर ऊपर क्यों आते हैं?

प्र. 5 किन्हीं छः प्रश्नों के उत्तर दो या तीन वाक्य में दें– 12

(क) सिद्धों के साथ रहने वाले एकेन्द्रिय जीवों को भी क्या मोक्ष सुख की अनुभूति होती है?

(ख) कर्म के कर्म लगता है या आत्मा के कर्म लगता है?

(ग) जब लिंग बाधक नहीं है, तब नपुंसक लिंगी के सम्यक्त्व का निषेध क्यों किया गया है।

(घ) क्या एकेन्द्रिय जीवों के निर्जरा होती है?

(ङ) क्या सभी केवलियों के केवली समुद्घात होता है?

(च) वैमानिक देव में पहला देवलोक से तीसरा देवलोक तक की स्थिति (आयुष्य) लिखें।

(छ) देवों में क्षयोपशम के कितने प्रकार हैं?

(ज) क्या सिद्धों की पर्याय भी बदलती है?

प्र. 6 किन्हीं तीन प्रश्नों के विस्तृत उत्तर लिखें– 12

(क) निर्जरा तो आठों कर्मों की होती है, फिर वर्णन केवल चार घातिक कर्मों की निर्जरा से प्राप्त गुणों का ही क्यों आता है?

(ख) समुद्घात किसे कहते हैं? इसके कितने प्रकार हैं, नाम बताते हुए अन्तिम तीन की व्याख्या करें।

(ग) महाविदेह क्षेत्र में सिद्ध होने में क्या अर का प्रभाव रहता है? किस योनि से निकलकर बने मनुष्य सबसे कम और सबसे ज्यादा सिद्ध हो सकते हैं?

(घ) देवताओं का आहार कौन सा होता है, बताते हुए स्पष्ट करें कि क्या देव योनि में नींद और वेदनीय का भी विपाकोदय होता है?

(ङ) वैमानिक देव के कितने प्रकार हैं?

गीतिका (दस दान अठारह पाप)–20

प्र. 7 कोई चार पद्य अर्थ सहित लिखें– 16

(क) खरच करे.....दान ए।।

(ख) इम सांभल.....भाष ए।।

(ग) जूनो छै.....नहीं ए।।

(घ) इणरो नहि.....घालियो ए।।

(ङ) गणिकादिक.....नाम ए।।

(च) आय मिले.....कही ए।।

प्र. 8 कोई चार प्रश्नों के उत्तर दें– 4

(क) कौन सा दान संसार में भ्रमण कराने वाला है?

(ख) गर्व दान से आप क्या समझते हैं?

(ग) कौन से व्यक्ति संसार रूपी कूप में गिर जाते हैं?

(घ) संसार परीत का क्या अर्थ है? कौन से व्यक्ति संसार परीत कर लेते हैं?

(ङ) धुरिया और बोहरा का उदाहरण कौन से दान के लिए दिया गया है?